ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

सच सच करें बखान

बात चीत से अब तलक, करते रहे विकास ।
अच्छे दिन की कल्पना,बंधी हुई है आस ।।-1

तोड़ दिया है आपने, जनता का विश्वास ।
मन्दिर मस्जिद ही बचा,अस्त्र आपके पास ।।-2

बन्द करेन्सी जब हुई , आशा थी भरपूर ।
हाथ लगा कुछ भी नहीं, हुई सफलता दूर ।।-3

सुन-सुनकर अब पक गये,हैं विकास के ढोल ।
दिखा धरातल पर नहीं, खुली आपकी पोल ।।-4

झूठ-मूठ का हो रहा, जितना यहाँ प्रचार।
पहले से दूना हुआ, अब तो भृष्टाचार ।।-5

मस्ती में हैं चूर सब, उस बस्ती के लोग ।
बहुत दिनों के बाद फिर, महुवा का संयोग ।।-6

अर्थ व्यवस्था हो गई, उसकी बड़ी खराब ।
राजा कहता इसलिये, पीने लगो शराब ।।-7

जमकर अब तो पीजिये, पियो नहीं दो घूंट ।
कल की करवट क्या पता, बैठेगा किस ऊँट ।।-8

बोतल लेकर दो चले, वर्दी में दीवान ।
'कोरोना' से जंग की, जिनके हाथ कमान ।।-9

आँख खोलकर बैठिये , बन्द न करिये कान ।
कलमकार यदि आप हैं, सच-सच करें बखान ।।-10

सूख गया बिरवा हरा, बचा सिर्फ है ठूंठ ।
भृष्ट ब्यवस्था खत्म है, शत प्रतिशत है झूँठ ।।-11

काम धाम करना नहीं, सिर्फ बजाना गाल ।
रुपये की कीमत घटी,गली न इनकी दाल ।।-12

जयराम जय

भारत में उ.प्र.प्रांत के फतेहपुर जिले के ग्राम व पोस्ट सुल्तान गढ़ में स्व. सुमित्रा देवी वंशीलाल यादव के पुत्र रूप में जयराम जय दिनांक 05 जनवरी 1959 को जन्मे हिंदी के जाने माने प्रतिष्ठित कवि हैं।

उ.प्र. आवस एवं विकास परिषद से सेवा निवृत्त , वास्तुविद् अभियंता के साथ आपने परास्नातक (हिंदी) छत्रपति साहू जी महराज कानपुर,विश्व विद्यालय से व पत्रकारिता महाविद्यालय दिल्ली से जर्नलिज्म का कोर्स करने के बाद लेखन में विशिष्ट छाप छोड़ी।आपकी कविताओं में जहां पारंपरिक छंदों को सम्मान मिला है,वही प्रयोगवादी व समकालीन गीत,नवगीत ,गज़ल, दोहे आदि काव्य की विशिष्ट विधाओं के साथ गद्य की विभिन्न विधाओं में निरंतर लेखन जारी है। । पूर्ववर्ती कवि प्रकाशन योजनान्तर्गत देवेन्द्र शास्त्री वह प्रभात शुक्ल प्रतिनिधि संकलनों व "पंख तितलियों के" समवेत संकलन का संपादन किया है। कानपुर से प्रकाशित पत्रिका" हमारा शहर"तथा सरौठ मथुरा से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'शेषामृत' का संपादन सहयोग। आपकी कई रचनाएं आम जन मानस में बहुत लोक प्रिय हैं। साथ ही साहित्यिक समरोहों में संचालकों द्वारा जयराम जय की कविताएं संचालन में ऊद्धृत की जाती हैं जो किसी बड़े पुरुस्कार से कम नहीं है। आपकी कविताएं आम जनमानस की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। वर्तमान में आप वास्तुविदीय कार्य तथा साहित्य सेवा के लिए पूर्णतयः समर्पित हैं।

जयराम 'जय'
'पर्णिका' बी-11/1,कृष्ण विहार,आवास विकास,
कल्याणपुर,कानपुर-208017(उ.प्र,)
मो.नं. 9415429104 ;9369848238
ई-मेल:jairamjay2011@gmail.com